

١٠٤

الصَّلِحَتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ<sup>٤</sup> وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ<sup>٥</sup>

किये और एक दूसरे को हक की ताकीद की<sup>4</sup> और एक दूसरे को सब्र की वसियत की<sup>5</sup>

﴿آيَاتُهَا ٩﴾ ﴿سُورَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ ٣٢﴾ ﴿رُكُوعُهَا ١﴾

सूरए हुमज़ह मक्किय्या है, इस में नव आयतें और एक रुकूअ है

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

اللَّهُ के नाम से शुरूअ जो निहायत मेहरबान रहम वाला<sup>1</sup>

وَيُدِّ لِكُلِّ هُنَزَةٍ لُّمْرَةً<sup>١</sup> الْزَيْ جَمْعٌ مَالًا وَعَدَدَةٌ<sup>٢</sup> يَحْسَبُ

ख़राबी है उस के लिये जो लोगों के मुंह पर ऐब करे पीठ पीछे बदी करे<sup>2</sup> जिस ने माल जोड़ा और गिन गिन कर रखा क्या यह समझता है

أَنَّ مَالَهُ أَخْلَدَهُ<sup>٣</sup> كَلَّا لِيُبْذَنَ فِي الْحُطَّةِ<sup>٤</sup> وَمَا أَدْرَاكَ مَا

कि उस का माल उसे दुनिया में हमेशा रखेगा<sup>3</sup> हरगिज़ नहीं ज़रूर वोह रौंदने वाली में फेंका जाएगा<sup>4</sup> और तू ने क्या जाना क्या

الْحُطَّةُ<sup>٥</sup> نَارُ اللَّهِ الْمُوقَدَةُ<sup>٦</sup> الَّتِي تَطَّلِعُ عَلَى الْآفِئَةِ<sup>٧</sup> إِنَّهَا

रौंदने वाली **اللَّهُ** की आग कि भड़क रही है<sup>5</sup> वोह जो दिलों पर चढ़ जाएगी<sup>6</sup> बेशक वोह

عَلَيْهِمْ مُّوَصَّدَةٌ<sup>٨</sup> فِي عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ<sup>٩</sup>

उन पर बन्द कर दी जाएगी<sup>7</sup> लम्बे लम्बे सुतूनों में<sup>8</sup>

में सब से पिछली इबादत है और सब से लज़ीज़ व राजेह तफ़सीर वोही है जो हज़रते मुतज़िम् **عَمْرُ** ने इख़्तियार फ़रमाई कि ज़माने से "मख़सूस ज़माना" सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** का मुवाद है जो बड़ी ख़ैरो बरकत का ज़माना और तमाम ज़मानों में सब से ज़ियादा फ़ज़ीलतो शरफ़ वाला है। **اللَّهُ** तआला ने हुज़ूर के ज़मानए मुबारक की क़सम याद फ़रमाई जैसा कि "لَا أُفِيسِمُ بِهَذَا الْبَلَدِ" में हुज़ूर के मस्कन व मकान की क़सम याद फ़रमाई है और जैसा कि "لَعْنَتِكَ" में आप की उम्र शरीफ़ की क़सम याद फ़रमाई और इस में शाने महबूबियत का इज़हार है। 3 : कि उस की उम्र जो उस का रासुल माल है और अस्ल पूंजी है वोह हर दम घट रही है। 4 : या'नी ईमान व अमले सालेह की। 5 : उन तकलीफ़ों और मशक़तों पर जो दीन की राह में पेश आईं, येह लोग ब फ़ज़ले इलाही टोटे में नहीं हैं क्यूं कि उन की जितनी उम्र गुज़री नेकी और ताअत में गुज़री तो वोह नफ़अ पाने वाले हैं। 1 : "सूरए हुमज़ह" मक्किय्या है। इस में एक रुकूअ, नव आयतें, तीस कलिमे, एक सो तीस हर्फ़ हैं। 2 : येह आयतें उन कुफ़्फ़र के हक़ में नाज़िल हुईं जो सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** और आप के अस्हाब पर ज़बाने ता'न खोलते थे और इन हज़रात की गीबत करते थे मिस्ल अख़स बिन शुरैफ़ व उमय्या बिन ख़लफ़ और वलीद बिन मुगीरा वग़ैरहुम के और हुक्म हर गीबत करने वाले के लिये आम है। 3 : मरने न देगा जो वोह माल की महब्वत में मस्त है और अमले सालेह की तरफ़ इल्तिफ़ात नहीं करता। 4 : या'नी जहन्म के उस दरके (तब्के) में जहां आग हड्डियां पस्लियां तोड़ डालेगी। 5 : और कभी सर्द नहीं होती। हदीस शरीफ़ में है : जहन्म की आग हज़ार बरस धोंकी गई यहां तक कि सुख़ हो गई, फिर हज़ार बरस धोंकी गई ता आं कि सफ़ेद हो गई, फिर हज़ार बरस धोंकी गई हत्ता कि सियाह हो गई तो वोह सियाह है अंधेरी। (उज़ी) 6 : या'नी ज़ाहिर जिस्म को भी जलाएगी और जिस्म के अन्दर भी पहुंचेगी और दिलों को भी जलाएगी। दिल ऐसी चीज़ हैं जिन को ज़रा सी भी गरमी की ताब नहीं, तो जब आतशे जहन्म का उन पर इस्तीला (ग़लबा) होगा और मौत आएगी नहीं तो क्या हाल होगा ! "दिलों को जलाना" इस लिये है कि वोह मक़ाम हैं कुफ़्र और अक़ाइदे बातिला व नियाते फ़ासिदा के। 7 : या'नी आग में डाल कर दरवाज़े बन्द कर दिये जाएंगे 8 : या'नी दरवाज़ों की बन्दिश आतिशी लोहे के सुतूनों से मज़बूत कर दी जाएगी कि कभी दरवाज़ा न खुले। बा'ज मुफ़स्सरीने ने येह मा'ना बयान किये हैं कि

١٠٤